|  |
| --- |
| 24. Juli  |
| **Fest der hl. Birgitta von Schweden** |
| **Mutter, Ordensgründerin, Schutzpatronin Europas** |
| Lesung: Gal 2,19-20; Evangelium: Joh 15, 1-8 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 143, 1+2 | Mein ganzes Herz |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 151 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria. Und Friede auf Erden |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 16, 1-2 u. 5. 7-8 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 629, 3 | Ich gehe meinen Weg vor Gott |
|  | Oder |  |
|  | GL 543, 3 | Mein Herz hängt treu und feste |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Bleibt in mir, dann bleibe ich in euch.* |
|  | *Wer in mir bleibt, der bringt reiche Frucht.* |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 2+3 | Seht, wie ich, der Herr, euch liebe |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 1 | Gottheit, tief verborgen |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 364, 1+5 | Schönster, Herr Jesu |
|  | GL 456, 1+4 | Herr, du bist mein Leben |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 455, 1+3 | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  |  |  |